The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 4 | April 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

भारतीय ओटीटी सिनेमा और हिंदी भाषा का बदलता परिदृश्य: भाषाई लोकतंत्रीकरण, सांस्कृतिक संकरण और नियामक चुनौतियों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सचिन गोस्वामी

शोधार्थी, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड मास कम्युनिकेशन, आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ

डॉ. नरेन्द्र कुमार मिश्र

प्रोफेसर, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड मास कम्युनिकेशन, आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20127229

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-04-2026

Published: 10-05-2026

Keywords:

हिंदी, ओटीटी, भाषाई लोकतंत्रीकरण, हिंग्लिश, सांस्कृतिक संकरण, आईटी नियम 2021, *विनियमन*

ABSTRACT

यह शोधपत्र तीन परस्पर संबंधित दृष्टिकोणों - भाषाई लोकतंत्रीकरण, सांस्कृतिक संकरण और विनियामक चुनौतियों - के माध्यम से भारतीय ओटीटी सिनेमा पर हिंदी भाषा के प्रभाव का विश्लेषण करता है। इसमें तर्क दिया गया है कि ओटीटी प्लेटफॉर्मों ने एक अखिल भारतीय माध्यम के रूप में हिंदी की केंद्रीयता को सुदृढ़ किया है और साथ ही बोलचाल की हिंदी, हिंग्लिश और उन बोलियों के लिए स्थान खोले हैं जो पारंपरिक फिल्म और टेलीविजन में हाशिए पर थीं, जिससे पहुंच, प्रतिनिधित्व और सांस्कृतिक पदानुक्रम में परिवर्तन आया है। साथ ही, सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यस्थ दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम 2021 और वर्गीकरण, सेंसरशिप और स्व-नियमन से संबंधित बहसें डिजिटल वातावरण में हिंदी सामग्री के उत्पादन, वर्गीकरण और विवाद के तरीके को नया आकार दे रही हैं।

प्रस्तावना

नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम वीडियो, डिज़्नी+ हॉटस्टार, ज़ी5, सोनीलिव और कई अन्य घरेलू सेवाओं जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म ने सिनेमा हॉल और ब्रॉडकास्ट टीवी से हटकर व्यक्तिगत, ऑन-डिमांड स्क्रीन पर देखने की ओर रुख करके भारत की फिल्म-केंद्रित वीडियो संस्कृति को बदल दिया है। इस परिवेश में, हिंदी एक

व्यावसायिक आधार और एक प्रतीकात्मक संसाधन दोनों के रूप में कार्य करती है, जो कैटलॉग प्राथमिकताओं, अनुशंसा प्रणालियों, डबिंग रणनीतियों और अंतर-क्षेत्रीय प्रसार को संरचित करती है। साथ ही, स्ट्रीमिंग के आगमन ने केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) व्यवस्था से जुड़ी कई भाषाई और शैलीगत बाधाओं को शिथिल कर दिया है, जिससे रचनाकारों को बोलचाल की भाषा, अपशब्द, सांकेतिक भाषा और क्षेत्रीय लहजे वाली हिंदी के उपयोग में अधिक स्वतंत्रता मिली है।(1)

यह शोधपत्र पाँच भागों में संगठित है। पहला भाग ओटीटी मीडिया पर लागू भाषाई लोकतंत्रीकरण और सांस्कृतिक संकरण की वैचारिक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। दूसरा भाग भारतीय स्क्रीन संस्कृति में हिंदी की ऐतिहासिक स्थिति और स्ट्रीमिंग द्वारा लाए गए परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। तीसरा भाग ओटीटी पर हिंदी को लोकतंत्रीकरण के एक उपकरण के रूप में विश्लेषित करता है, विशेष रूप से बोलचाल की भाषा और बोली-आधारित प्लेटफार्मों के माध्यम से। चौथा भाग हिंग्लिश और बहुभाषी कहानी कहने के माध्यम से संकरण पर केंद्रित है। पांचवा भाग आईटी नियम 2021 के अंतर्गत हिंदी-प्रधान ओटीटी सामग्री से संबंधित नियामक चुनौतियों और नीतिगत बहसों तथा संबंधित कानूनी और संस्थागत गतिशीलता का विश्लेषण करता है।(2)

शोध उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- भारतीय ओटीटी सिनेमा में हिंदी भाषा की वर्तमान भूमिका और उसके बदलते रूपों का विश्लेषण करना।
- ओटीटी सामग्री में बोलचाल की हिंदी, हिंग्लिश तथा क्षेत्रीय बोलियों की उपस्थिति को भाषाई बहुलता के संदर्भ में समझना।
- सांस्कृतिक संकरण की प्रक्रिया में हिंदी और अन्य भाषाओं के पारस्परिक संबंधों की जांच करना।
- आईटी नियम 2021 के अंतर्गत हिंदी-प्रधान डिजिटल सामग्री से संबंधित नियामकीय चुनौतियों का परीक्षण करना।
- ओटीटी मंचों के माध्यम से हिंदी की राष्ट्रीय तथा वैश्विक पहुंच का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न

यह अध्ययन निम्नलिखित शोध प्रश्नों के आधार पर निर्मित है:

- भारतीय ओटीटी मंचों ने हिंदी भाषा के स्वरूप और उपयोग को किस प्रकार प्रभावित किया है?
- क्या ओटीटी ने हिंदी के गैर-मानक रूपों, बोलियों और हिंग्लिश को वैध अभिव्यक्ति के रूप में स्थापित किया है?
- हिंदी और अन्य भाषाओं के मेल से उत्पन्न सांस्कृतिक संकरण का स्वरूप क्या है?
- हिंदी-प्रधान ओटीटी सामग्री के संदर्भ में आईटी नियम 2021 किस प्रकार की संरचनात्मक और वैचारिक चुनौतियां उत्पन्न करते हैं?
- क्या ओटीटी के विस्तार ने हिंदी को एक सर्वग्राही माध्यम बनाया है, या इससे क्षेत्रीय भाषाओं के साथ नई प्रतिस्पर्धा भी पैदा हुई है?

साहित्य समीक्षा

उपलब्ध साहित्य यह संकेत करता है कि भारतीय मीडिया परिदृश्य में हिंदी लंबे समय से एक प्रमुख सांस्कृतिक और संप्रेषणीय भाषा रही है, किंतु ओटीटी मंचों ने इसके स्वरूप में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। पूर्ववर्ती अध्ययनों में हिंदी सिनेमा को राष्ट्रीय पहचान, लोकप्रिय संस्कृति और भाषाई प्रसार के प्रमुख माध्यम के रूप में देखा गया है, जबकि कुछ आलोचनात्मक अध्ययनों ने यह रेखांकित किया है कि हिंदी प्रभुत्व ने कभी-कभी क्षेत्रीय भाषिक अस्मिताओं को हाशिए पर डाला।

मीडिया में भाषाई लोकतंत्रीकरण संबंधी विचार यह स्पष्ट करते हैं कि डिजिटल माध्यमों में मानक और गैर-मानक भाषा के बीच की सीमाएं अपेक्षाकृत कमजोर हुई हैं। इसी संदर्भ में ओटीटी प्लेटफॉर्म बोलचाल की हिंदी, सामाजिक-क्षेत्रीय लहजों, अपभाषा और मिश्रित भाषिक संरचनाओं को अधिक स्थान देते हैं। सांस्कृतिक संकरण पर आधारित अध्ययनों से ज्ञात होता है कि हिंदी अब केवल शुद्ध रूप में नहीं, बल्कि अंग्रेज़ी और अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंतःक्रिया में प्रयुक्त हो रही है, जिससे कथ्य, चरित्र-निर्माण और वर्ग-चिह्नन के नए रूप उभरते हैं।

नियामकीय विमर्श में आईटी नियम 2021 को एक महत्वपूर्ण मोड़ माना गया है, क्योंकि इसने ओटीटी सामग्री के लिए आयु-वर्गीकरण, शिकायत-निवारण और स्व-नियमन की संरचना प्रस्तुत की। कई अध्ययनों ने यह भी इंगित किया है कि हिंदी सामग्री, अपनी व्यापक सामाजिक पहुंच के कारण, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संवेदनशीलताओं के संदर्भ में अधिक निगरानी और विवाद का विषय बनती

है। इस प्रकार उपलब्ध साहित्य हिंदी ओटीटी सामग्री को भाषाई स्वतंत्रता, सांस्कृतिक विविधता और नियामकीय नियंत्रण के अंतर्संबंध में समझने की आवश्यकता पर बल देता है।

शोध पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें द्वितीयक स्रोतों—जैसे शोध लेख, पुस्तकें, नीतिगत दस्तावेज, मीडिया रिपोर्ट, कानूनी लेख और ओटीटी उद्योग से संबंधित विश्लेषणात्मक सामग्री—का उपयोग किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है, ताकि हिंदी भाषा के बदलते प्रयोगों, सांस्कृतिक संकरण की प्रक्रियाओं और नियामकीय संरचनाओं को गहराई से समझा जा सके।

विषयवस्तु विश्लेषण की पद्धति के माध्यम से हिंदी-प्रधान ओटीटी सामग्री में प्रयुक्त भाषिक रूपों, संवाद-शैली, वर्गीय एवं क्षेत्रीय अभिव्यक्तियों तथा हिंग्लिश के प्रयोग का अध्ययन किया गया है। साथ ही, नियामकीय दस्तावेजों और सार्वजनिक बहसों के अध्ययन द्वारा यह समझने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल हिंदी सामग्री पर नियंत्रण, वर्गीकरण और शिकायत-तंत्र किस प्रकार काम करते हैं। अध्ययन का स्वभाव विश्लेषणात्मक-व्याख्यात्मक है, इसलिए इसका उद्देश्य सांख्यिकीय निष्कर्ष प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि भाषा, संस्कृति और नीति के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करना है।

वैचारिक परिप्रेक्ष्य

मीडिया में भाषाई लोकतंत्रीकरण से तात्पर्य "मानक" और "गैर-मानक" रूपों के बीच कठोर पदानुक्रमों के कमजोर होने और सार्वजनिक संचार में रोजमर्रा की और निम्नवर्गीय भाषा की व्यापक दृश्यता से है। भारतीय संदर्भ में, इसमें दूरदर्शन युग के प्रसारण से जुड़ी अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ, औपचारिक हिंदी से हटकर बोलचाल की, क्षेत्रीय विशेषताओं वाली और मिश्रित भाषा की ओर बढ़ना शामिल है जो बहुभाषी प्रथाओं को प्रतिबिंबित करती है। सदस्यता-आधारित और विशिष्ट लक्षित दर्शकों के अनुकूल ओटीटी सेवाएं, एकरूपता और कड़े राज्य विनियमन पर निर्भर जन-प्रसारण प्रणालियों की तुलना में संरचनात्मक रूप से इस तरह के विविधीकरण का सांस्कृतिक संकरण यह दर्शाता है कि कैसे वैश्विक और स्थानीय तत्व मिलकर नए सौंदर्य रूप, विधाएँ और पहचानें बनाते हैं।(3) भारतीय सिनेमाई संस्कृति में, यह संकरण कास्टिंग, संगीत, फैशन और सबसे स्पष्ट रूप से भाषा के माध्यम से दिखाई देता है, जहाँ हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं के साथ मिलकर आधुनिकता, आकांक्षा और जड़ों से जुड़ाव का भाव एक साथ प्रकट करती है। यहाँ नियामक चुनौतियों को रचनात्मक स्वतंत्रता, बाज़ार के तर्क, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और राज्य-नियंत्रित शासन के बीच तनाव के रूप में समझा जाता है, विशेष रूप से हिंदी

आधारित सामग्री में अश्लीलता, घृणास्पद भाषण, धर्म और "राष्ट्रीय संस्कृति" से संबंधित मुद्दों के संदर्भ में।(4)

भारतीय सिनेमा संस्कृति में हिंदी

ऐतिहासिक रूप से, हिंदी सिनेमा (बॉलीवुड) एक प्रतीकात्मक राष्ट्रीय सिनेमा और भारत के भीतर एवं प्रवासी समुदाय में हिंदी के प्रसार का सबसे प्रत्यक्ष माध्यम रहा है। विद्वानों का तर्क है कि हिंदी फिल्में गीतों, संवादों और मुहावरों में हिंदी को समाहित करके उसे संरक्षित और नया रूप देती हैं, जो सिनेमाघरों से परे जाकर रोजमर्रा की बातचीत और अनौपचारिक भाषा सीखने में भी प्रचलित हो जाते हैं। वहीं दूसरी ओर, आलोचकों का कहना है कि हिंदी-प्रधान फिल्म उद्योग ने कभी-कभी क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों को पीछे छोड़ दिया है, जिससे गैर-हिंदी भाषी समुदायों में सांस्कृतिक अलगाव की भावना पैदा हुई है।

टेलीविजन ने सैटेलाइट जनरल एंटरटेनमेंट चैनलों (जीईसी) और समाचार नेटवर्कों के माध्यम से हिंदी की पहुंच को और मजबूत किया, जो मानकीकृत हिंदी का उपयोग करते थे, हालांकि विज्ञापनदाताओं और नियामकों के दबाव के कारण अक्सर कठोर अपशब्दों या आपत्तिजनक सामग्री के प्रति सीमित सहनशीलता रखते थे। इस विरासत का अर्थ यह था कि स्ट्रीमिंग से पहले, स्क्रीन पर हिंदी एक तरफ साफ-सुथरी, पारिवारिक सामग्री और दूसरी तरफ फॉर्मूला आधारित जन सिनेमा से दृढ़ता से जुड़ी हुई थी, जिससे ओटीटी वेब सीरीज और डायरेक्ट-टू-डिजिटल फिल्मों में अब आम हो चुकी अधिक "कठोर" भाषा के लिए बहुत कम जगह बची थी।(5)

ओटीटी पर हिंदी और भाषाई लोकतंत्रीकरण

ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने एक खंडित बाज़ार बनाया है जहाँ हिंदी सामग्री विभिन्न लक्षित दर्शकों को आकर्षित कर सकती है: शहरी युवा, छोटे शहरों के दर्शक, प्रवासी दर्शक और विशिष्ट वर्ग। इसने ऐसी सामग्री को बढ़ावा दिया है जो स्थानीय हिंदी, बोलचाल की भाषा और क्षेत्रीय बोलचाल को प्रमुखता देती है, उत्तर भारत के छोटे शहरों में फिल्माए गए गैंगस्टर ड्रामा से लेकर कैंपस स्लैंग और सोशल मीडिया मुहावरों का उपयोग करने वाली युवा-केंद्रित कॉमेडी तक। आईटी नियमों के ढांचे के तहत प्रसारण सेंसरशिप से आयु-आधारित, सदस्यता-आधारित पहुंच में बदलाव ने वर्जित शब्दों और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील अभिव्यक्तियों के साथ अधिक लचीला व्यवहार संभव बनाया है, हालांकि यह एक तेजी से निगरानी वाले नियामक वातावरण के भीतर है।(6)

भाषाई लोकतंत्रीकरण का एक उदाहरण STAGE जैसे बोली-केंद्रित हिंदी प्लेटफॉर्मों का उदय भी है, जो हरियाणवी, राजस्थानी और अन्य क्षेत्रीय बोलियों में विशेषज्ञता रखते हैं और मानकीकृत हिंदी के एकाधिकार को चुनौती दे रहे हैं। ये सेवाएं दर्शाती हैं कि दर्शक अपनी बोली में उपलब्ध सामग्री के लिए भुगतान करने को तैयार हैं, जिससे मुख्यधारा के ओटीटी प्लेटफॉर्म उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और दिल्ली एनसीआर के विशिष्ट क्षेत्रों में आधारित बोली-समृद्ध कहानियों में अधिक निवेश कर रहे हैं। सबटाइटलिंग और डबिंग हिंदी मूल सामग्री को गैर-हिंदी बाजारों में और इसके विपरीत, प्रसारित करके लोकतंत्रीकरण को और बढ़ावा देते हैं, जिससे बहुभाषी उपभोग सामान्य हो जाता है।(7)

सांस्कृतिक संकरण: हिंदी, हिंग्लिश और बहुभाषावाद

हिंदी-अंग्रेज़ी भाषा का मिश्रण, जिसे आमतौर पर हिंग्लिश कहा जाता है, भारतीय मीडिया और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में एक प्रमुख भाषाई प्रवृत्ति बन गया है। बॉलीवुड के अध्ययनों से पता चलता है कि हिंदी और अंग्रेज़ी के बीच सांकेतिक भाषा का प्रयोग और शब्दों का आदान-प्रदान शहरी परिष्कार, युवा संस्कृति और महानगरीय आकांक्षाओं को दर्शाता है। ओटीटी श्रृंखलाओं ने अधिक मुखर, तीव्र और संवादात्मक भाषा के माध्यम से इन प्रवृत्तियों को और भी तीव्र कर दिया है। ओटीटी कथाएँ वर्ग, क्षेत्र, लिंग और वैचारिक दृष्टिकोण के आधार पर पात्रों को अलग करने के लिए संकरण भाषा का उपयोग करती हैं, जिसमें अभिजात वर्ग के पात्रों के लिए अंग्रेज़ी-प्रधान भाषा और महत्वाकांक्षी मध्यम और निम्न-मध्यम वर्गों के लिए हिंदी-प्रधान लेकिन मिश्रित भाषा का प्रयोग किया जाता है।(8)

सांस्कृतिक संकरण केवल हिंदी-अंग्रेज़ी के मिश्रण तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह जटिल बहुभाषी लिपियों तक भी फैला हुआ है, जिनमें पृष्ठभूमि और कथानक के अनुसार हिंदी पंजाबी, मराठी, बंगाली, तमिल या उर्दू के साथ संवाद स्थापित करती है। ऐसी कहानियों में, हिंदी अक्सर एक केंद्र बिंदु के रूप में कार्य करती है जो अंतर-क्षेत्रीय संचार को सक्षम बनाती है, साथ ही साथ क्षेत्रीय अभिव्यक्तियों, लोक मुहावरों और स्थानीय पहचान को दर्शाने वाले गीतों के लिए भी स्थान छोड़ती है। यह संकरण अखिल भारतीय और वैश्विक दर्शकों के लिए जुड़ाव को बढ़ाता है, विशेष रूप से उपशीर्षकों और कई ऑडियो ट्रैक के साथ, जिससे ओटीटी प्लेटफॉर्म "भारतीयता" को एकभाषी हिंदी उत्पाद के बजाय एक बहुआयामी, बहुभाषी अनुभव के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।(9)

भाषाई लोकतंत्रीकरण बनाम क्षेत्रीय वर्चस्व

OTT ने हिंदी भाषा को लोकतांत्रिक बनाया है, लेकिन साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देकर हिंदी के पूर्व प्रभुत्व को भी कमज़ोर किया है। उद्योग विश्लेषण बताते हैं कि स्ट्रीमिंग ने मलयालम, तमिल, तेलुगु, बंगाली और मराठी सिनेमा को अभूतपूर्व दृश्यता प्रदान की है, और उपशीर्षकों की मदद से विभिन्न भाषाओं में फिल्मों का उपभोग संभव हो पाया है, जो बॉलीवुड की ऐतिहासिक केंद्रीयता को चुनौती देता है। इससे यह बहस छिड़ गई है कि क्या OTT पर हिंदी प्रोजेक्ट क्षेत्रीय मूल फिल्मों की तुलना में प्रमुख स्थान, उच्च विपणन बजट और अधिक व्यवस्थित डबिंग प्राप्त करके पुरानी व्यवस्था को पुन: स्थापित कर रहे हैं।(10)

फिर भी, दक्षिण भारतीय ब्लॉकबस्टर फिल्मों और क्षेत्रीय वेब सीरीज़ के डब किए गए हिंदी संस्करणों का प्रसार एक दोतरफा प्रवाह को दर्शाता है, जिसमें हिंदी क्षेत्रीय सामग्री के लिए एक सेतु का काम करती है ताकि हिंदी भाषी दर्शकों तक पहुंचा जा सके। हिंदी में डबिंग और रीमेकिंग की प्रथा न केवल क्षेत्रीय सितारों की लोकप्रियता बढ़ाती है, बल्कि उत्तर भारत में क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रतीकों, बोलचाल की भाषा और कथा संरचनाओं का प्रसार भी करती है, जिससे हिंदी सांस्कृतिक वर्चस्व की सरल धारणाएं जटिल हो जाती हैं। इस अर्थ में, ओटीटी पर भाषाई लोकतंत्रीकरण द्वंद्वात्मक है: हिंदी पहुंच को सक्षम बनाती है, साथ ही साथ क्षेत्रीय मुहावरों द्वारा इसे नया रूप दिया जाता है और यह क्षेत्रीय भाषाओं के साथ स्क्रीन स्पेस के लिए प्रतिस्पर्धा करती है।(11)

नियामक परिदृश्य: आईटी नियम 2021

भारत में ओटीटी सामग्री को नियंत्रित करने वाला प्रमुख औपचारिक ढांचा सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यस्थ दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम 2021 है, जो आईटी अधिनियम 2000 के तहत जारी किया गया है। ये नियम एक त्रिस्तरीय तंत्र प्रस्तुत करते हैं जिसमें प्रकाशक द्वारा स्वनियमन (शिकायत अधिकारी और आंतरिक आचार संहिता सहित), प्रकाशकों के स्वनियामक निकाय और केंद्र सरकार, विशेष रूप से सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की निगरानी भूमिका शामिल है। हिंदी ओटीटी सामग्री के लिए, यह व्यवस्था पहले की अनिश्चितता को दूर करती है और सामग्री के वर्गीकरण, शिकायत निवारण और अश्लीलता, मानहानि और उकसावे जैसे क्षेत्रों में फिल्म और प्रसारण मानकों के अनुरूप संरचित अपेक्षाएं निर्धारित करती है।

आईटी नियमों के तहत आयु-आधारित सामग्री रेटिंग, माता-पिता के नियंत्रण और यौन हिंसा, अभद्र भाषा और नशीली दवाओं जैसे विषयों को कवर करने वाले सामग्री विवरण अनिवार्य हैं। व्यवहार में, इसने प्लेटफार्मों को हिंदी में आपत्तिजनक भाषा और अपशब्दों को अधिक व्यवस्थित रूप से टैग करने

के लिए प्रोत्साहित किया है, और नियामक दबाव और सार्वजनिक शिकायतों के जवाब में कभी-कभी संवादों को संशोधित करने या विशिष्ट शब्दों को म्यूट करने के लिए भी प्रेरित किया है। हिंदी, कई मुख्यधारा के प्लेटफार्मों पर सबसे व्यापक रूप से समझी जाने वाली भाषा होने के कारण, धर्म, जाति, राष्ट्रीय प्रतीकों या कानून प्रवर्तन से संबंधित विषयों पर बात होने पर अत्यधिक जांच का सामना करती है, जिससे कानूनी नोटिस, एफआईआर और बहिष्कार की मांगें उठती हैं, जो भविष्य में स्व-सेंसरशिप को बढ़ावा देती हैं।(12)

हिंदी ओटीटी सामग्री से संबंधित विनियामक चुनौतियाँ

हिंदी ओटीटी सामग्री को विनियमित करने में कई विशिष्ट चुनौतियाँ हैं। पहली, समकालीन हिंदी की अनौपचारिकता और प्रवाह, जो बोलचाल की भाषा और हिंग्लिश से भरपूर है, "आपत्तिजनक" भाषा के लिए स्थिर, नियम-आधारित मानदंड बनाने के प्रयासों को जटिल बनाती है, विशेष रूप से जब युवा और उपसांस्कृतिक संदर्भों में शब्दों का पुनर्उपयोग किया जाता है। दूसरी, हिंदी सामग्री अक्सर राष्ट्रीय राजनीति, सांप्रदायिक संबंध और सुरक्षा जैसे अखिल भारतीय विषयों को संबोधित करती है, जो कथाओं और संवाद की राजनीतिक संवेदनशीलता को बढ़ाती है, जिससे विनियामक और गैर-कानूनी दबाव बढ़ जाते हैं। तीसरी, प्रवर्तन विभिन्न मंत्रालयों, न्यायालयों और अर्ध-विनियामक निकायों में खंडित है, जिससे ओटीटी निर्माताओं के लिए हिंदी मूल सामग्री में भाषाई और विषयगत जोखिम की स्वीकार्य सीमा के बारे में अनिश्चितता बनी रहती है। नागरिक समाज और उद्योग जगत के आलोचकों का तर्क है कि आईटी नियम 2021 और अनौपचारिक दबाव के संयोजन से प्लेटफॉर्म विवाद पैदा करने वाले हिंदी संवादों को पहले से ही नरम करने के लिए प्रोत्साहित हो सकते हैं, जिससे स्पष्ट, हाशिए पर रहने वाले या असहमतिपूर्ण भाषण की लोकतांत्रिक शक्ति कम हो सकती है। दूसरी ओर, सख्त निगरानी के पैरोकार नाबालिगों की सुरक्षा, (13) घृणास्पद भाषण को रोकने और "सांस्कृतिक मूल्यों" को बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर देते हैं, अक्सर हिंदी सामग्री में आपत्तिजनक भाषा और संस्थानों के प्रति कथित अनादर को निशाना बनाते हैं। रचनात्मक स्वतंत्रता और नैतिक-राजनीतिक विनियमन के बीच यह तनाव संभवतः तब तक प्रमुख बना रहेगा जब तक हिंदी ओटीटी कथाएँ अधिक राजनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में प्रवेश करती रहेंगी।(14)

हिंदी ओटीटी, सॉफ्ट पावर और वैश्विक प्रसार

ओटीटी ने हिंदी की वैश्विक पहुंच को पारंपरिक प्रवासी-केंद्रित वितरणों से कहीं आगे बढ़ा दिया है। अंतर्राष्ट्रीय स्ट्रीमिंग सेवाएं वैश्विक कैटलॉग के लिए हिंदी मूल सामग्री और लाइसेंस प्राप्त फिल्मों का चयन

करती हैं, और कई भाषाओं में उपशीर्षक और डबिंग का लाभ उठाकर हिंदी सामग्री को दक्षिण एशियाई और "वैश्विक" मनोरंजन पेशकशों के एक प्रमुख घटक के रूप में स्थापित करती हैं। अकादमिक शोध से पता चलता है कि इस तरह का प्रसार हिंदी की प्रतीकात्मक पूंजी को मजबूत करता है, साथ ही वैश्विक दर्शकों को हिंदी-अंग्रेजी के मिश्रित रूप और बहुभाषी भाषा से परिचित कराता है जो पाठ्यपुस्तकों में दी गई हिंदी से भिन्न है।(15)

हालांकि, वैश्विक प्रसार घरेलू भाषाई राजनीति को भी प्रभावित कर सकता है। सफल हिंदी ओटीटी शो और फिल्में शहरी, उच्च-मध्यम वर्ग की उन शैलियों को प्राथमिकता दे सकती हैं जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हैं, और इससे ग्रामीण और श्रमिक वर्ग की हिंदी की किस्में हाशिए पर जा सकती हैं, जब तक कि बोलियों से भरपूर सामग्री द्वारा इसका संतुलन न बनाया जाए। हिंदी डबिंग और सबटाइटल के माध्यम से प्रसारित होने वाली क्षेत्रीय भाषाओं की हिट फिल्में एक वैकल्पिक सॉफ्ट पावर मार्ग का संकेत देती हैं जिसमें हिंदी एकमात्र नायक के बजाय मध्यस्थ की भूमिका निभाती है, जो भारतीय सांस्कृतिक निर्यात के अधिक बहुकेंद्रीय मॉडल को दर्शाती है।(16)

सारांश: लोकतंत्रीकरण, संकरण और नियमन

उपरोक्त पहलुओं को मिलाकर देखें तो भारतीय ओटीटी सिनेमा पर हिंदी का प्रभाव लोकतंत्रीकरण, संकरण और नियमन के बीच एक गतिशील संतुलन के रूप में सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है। भाषाई लोकतंत्रीकरण ने पर्दे पर दिखाई देने वाली हिंदी की स्वीकृत शब्दावली को विस्तृत किया है, जिसमें बोलचाल, स्थानीय बोली और वर्जित अभिव्यक्तियों को शामिल किया गया है जो रोजमर्रा की बातचीत को अधिक सटीक रूप से दर्शाती हैं। सांस्कृतिक संकरण ने हिंग्लिश और बहुभाषी लिपियों जैसे मिश्रित कोड को प्रामाणिकता, युवावस्था और विश्ववाद के प्रतीक के रूप में स्थापित किया है, जिससे हिंदी को एक स्थिर राष्ट्रीय भाषा के बजाय एक लचीले, संकर संसाधन के रूप में पुनर्परिभाषित किया गया है। नियामक ढाँचे, विशेष रूप से आईटी नियम 2021 और संबंधित विवाद, सीमाएँ निर्धारित करके इन प्रवृत्तियों को नियंत्रित करते हैं, अक्सर उन क्षणों की प्रतिक्रिया में जब हिंदी सामग्री कथित सांस्कृतिक या राजनीतिक सीमाओं को पार करती है।(17)

इसका समग्र परिणाम यह है कि हिंदी ओटीटी का परिदृश्य सिनेमा और टेलीविजन के अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में कहीं अधिक समावेशी और साथ ही अधिक विवादास्पद भी है। दर्शकों को हिंदी भाषा और विधाओं में अभूतपूर्व विकल्प प्राप्त हैं, जबकि रचनाकारों को बाजार के प्रोत्साहनों, एल्गोरिथम दृश्यता, दर्शकों की अपेक्षाओं और इस बात पर बहुआयामी नियंत्रण के जटिल अंतर्संबंधों से निपटना होगा कि

क्या कहा जा सकता है, कैसे कहा जा सकता है और किस भाषाई रूप में कहा जा सकता है। यह गतिशीलता न केवल स्क्रीन पर हिंदी के भविष्य को आकार देगी, बल्कि डिजिटल भारत में भाषाई न्याय, सांस्कृतिक नागरिकता और मीडिया स्वतंत्रता पर व्यापक बहसों को भी प्रभावित करेगी।(18)

संदर्भ सूची (References)

1. Ramda, G. (2020). *Bharat ki videsh niti: 21वीं shatabdi mein badalte vaishvik paridrishya mein parivartan ki ओर agrasar* [India's foreign policy: Moving toward change in the changing global scenario of the 21st century]. *International Journal of Political Science and Governance, 2*(2), 129–133. https://doi.org/10.33545/26646021.2020.v2.i2c.68
2. Singh, S. (2025). *हिंदी नाटक एवं रंगमंच का बदलता स्वरूप*. *International Journal on Science and Technology, 16*(4). https://doi.org/10.71097/ijsat.v16.i4.8953
3. गुप्ता, के. (2017). *भारतीय टीवी विज्ञापनों में हाइब्रिडाइजेशन का मुद्दा*. *The Criterion: An International Journal in English, 8*(4), 1101–1112.
4. खुराना, पी. एस. (2025). *भारत में ओटीटी प्लेटफॉर्म का नियमन: कानूनी चुनौतियाँ और मीडिया कानून*. *Legal Eye*. प्राप्त किया गया from https://legaleye.co.in/blog_news/regulation-of-ott-platforms-in-india-legal-challenges-and-media-laws/
5. तिवारी, इशिता. (2024). *स्ट्रीमिंग और भारत का फ़िल्म-केंद्रित वीडियो संस्कृति*. *International Journal of Cultural Studies, 27*(1), 65–81. https://doi.org/10.1177/13678779231197696
6. रानी, यशिता. (2025). *Emergence of OTT Platforms and Changing Dynamic of Indian Cinema*. दिल्ली कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स ऐंड कॉमर्स (DCAC) डीस्पेस रिपॉजिटरी. Retrieved from http://dcac.dspaces.org/xmlui/bitstream/handle/123456789/2225/Emergence%20of%20OTT%20Platforms%20and%20Changing%20Dynamic%20of%20Indian.pdf?sequence=1
7. गौर, यशस्वी. (2024, नवंबर 7). *ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर IT Rules, 2021 का प्रभाव: मीडिया कानून*. *IP & Legal Filings*. https://www.ipandlegalfilings.com/media-law-impact-of-it-rules-2021-on-ott-platforms/
8. शिरोडकर, मीरा, & चक्रवर्ती, प्रीथा. (2025). *Beyond Bollywood: An Analysis of the Growing Influence of Regional Cinema in the Indian Film Market*. *European Economic Letters, 15*(1), 283–287.
9. वर्मा, श्रुति. (2024). *Hinglish Today: Analysis of Linguistic Features of Hinglish Language in Contemporary Indian Literature*. *Shodh Sari – An International Multidisciplinary Journal, 3*(1), 218–228. https://doi.org/10.59231/SARI7667
10. शाह, जिगर. (2024, 1 सितंबर). *Cinema transcends language: The powerful impact of regional films on Bollywood; are Pan-Indian projects the future? Times of India*. https://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/bollywood/news/cinema-transcends-

language-the-powerful-impact-of-regional-films-on-bollywood-are-pan-indian-projects-the-future-exclusive/articleshow/112941387.cms

11. श्रीवास्तव, गीतम, एवं पाण्डेय, ए. राम. (2024). *The rise of Hindi OTT platforms: Transforming India's entertainment landscape*. *REDVET – Revista Electrónica de Veterinaria, 25*(2), 735–773.
12. शिरोडकर, मीरा, एवं चक्रवर्ती, प्रीथा. (2025). *Beyond Bollywood: An analysis of the growing influence of regional cinema in the Indian film market*. *European Economic Letters, 15*(1), 283–287.
13. "भारत में OTT नियम: टर्फ़ वॉर और परिभाषात्मक अस्पष्टताएँ।" (2024, 26 सितंबर). *Internet Governance*. https://www.internetgovernance.org/2024/09/26/ott-regulation-in-india-turf-wars-definitional-ambiguities/
14. "सूचना प्रौद्योगिकी (इंटरमीडियरी मार्गदर्शन और डिजिटल मीडिया नैतिकता संहिता) नियम, 2021 (06 अप्रैल 2023 तक अद्यतन)।" (2023). *इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY), भारत सरकार*. https://www.meity.gov.in/static/uploads/2024/02/Information-Technology-Intermediary-Guidelines-and-Digital-Media-Ethics-Code-Rules-2021-updated-06.04.2023-.pdf
15. मल्होत्रा, अर्विंद. (2025). *हिंग्लिश एक नई भाषाई प्रवृत्ति: बॉलीवुड फिल्मों का केस स्टडी. जर्नल ऑफ़ लिंग्विस्टिक्स एंड कम्युनिकेशन स्टडीज़, 4*(1), 19–25. https://www.pioneerpublisher.com/JLCS/article/view/1213
16. खान, हरीश. (2024, 12 दिसंबर). *ब्रॉडकास्टिंग और OTT प्लेटफॉर्म्स में सेंसरशिप: IT नियम 2021 के तहत OTT कंटेंट का नियमन. लीगल वायर*. https://legal-wires.com/columns/censorship-in-broadcasting-and-ott-platforms-regulation-of-ott-content-under-it-rules-2021/
17. मुखर्जी, किटी, एवं दास, उज्जवल चंद्र. (2025). *मनोरंजन से परे: हिंदी सिनेमा का हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में प्रभाव. International Journal on Science and Technology (IJSAT), 16*(3). https://www.ijsat.org/papers/2025/3/8242.pdf
18. मुखर्जी, किटी, एवं दास, उज्जवल चंद्र. (2025). *मनोरंजन से परे: हिंदी सिनेमा का हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में प्रभाव* [*Beyond entertainment: An examination of Hindi cinema's influence in advancing the Hindi language*]. *International Journal on Science and Technology (IJSAT), 16*(3). https://www.ijsat.org/papers/2025/3/8242.pdf